



आधुनिक युग में उपनिषदों में वर्णित यमों की प्रासंगिकता

KEYWORDS

उपनिषद्, यम, अहिंसा, सत्य

NAVINDRA BAI

RESEARCH SCHOLAR, DEPARTMENT OF PHILOSOPHY, KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA, 136119

ABSTRACT उपनिषदों में ऋषि और शिष्य के बीच बहुत सुंदर और गूढ़ संवाद है जो पाठक को वेद के मर्म तक पहुँचाता है। उपनिषदों की सबसे प्रमुख विशेषता सच्चाई पर बल देना है। कुछ उपनिषदों में पंतजलि के समान योग के आठ अंग माने जाते हैं किन्तु कुछ में केवल छः अंग ही माने गए हैं। योग के आठ अंगों में एक अंग 'यम' है। ईशाोपनिषद् आदि प्रधान उपनिषदों में यद्यपि यम-नियमों का नाम लेकर अथवा योगांगों के रूप में उनका उल्लेख नहीं किया गया किन्तु इन उपनिषदों में सत्य, ब्रह्मचर्य, तपस्या पर बहुत बल दिया गया है। उपनिषदों में कायिक, वाचिक तथा मानसिक तीनों ही प्रकार की अहिंसा अपेक्षित है। मुण्डकोपनिषद् में सत्य को ब्रह्म प्राप्ति के साधनों में प्रमुख माना गया है। विश्व में भ्रातृत्व, सौहार्द, तथा सामंजस्य स्थापित करने हेतु अहिंसा व सत्य के वैदिक सूत्र आज भी उपयोगी हैं।

उपनिषद् शब्द का साधारण अर्थ है— 'समीप उपवेशन' या समीप बैठना (ब्रह्म विद्या की प्राप्ति के लिए शिष्य का गुरु के पास बैठना)। यह शब्द 'उप' 'नि' उपसर्ग तथा सद् धातु से निष्पन्न हुआ है। सद् धातु के तीन अर्थ हैं—नाश होना, गति पाना या जानना तथा अवसादन (शिथिल होना)। उपनिषदों में ऋषि और शिष्य के बीच बहुत सुंदर और गूढ़ संवाद है जो पाठक को वेद के मर्म तक पहुँचाता है। उपनिषदों में आत्मा, परमात्मा, मोक्ष एवं पुनर्जन्म की अवधारणा मिलती है। उपनिषदों की सबसे प्रमुख विशेषता सच्चाई पर बल देना है। उपनिषदों की मशहूर प्रार्थना में प्रकाश और ज्ञान की कामना की गई है— 'असत् से मुझे सत् की ओर ले चल, अंधकार से मुझे प्रकाश की ओर ले चल, मृत्यु से मुझे अमरत्व की ओर ले चल। ऐतरेय ब्राह्मण में लंबी अनंत अनिवार्य यात्रा के बारे में एक स्त्रोत है। हर श्लोक का अंत इस टेक से होता है— चरैवेति, चरैवेति— हे यात्री, इसलिए चलते रहो, चलते रहो। उपनिषदों में जाच पड़ताल की चेतना और चीजों के बारे में सत्य की खोज का उत्साह दिखाई पड़ता है। यह सही है कि सत्य कि यह खोज आधुनिक विज्ञान की वस्तुनिष्ठ पद्धति से नहीं की गई, फिर भी उनके दृष्टिकोण में वैज्ञानिक पद्धति का तत्व मौजूद है।

उपनिषदों की कुल संख्या 108 मानी गई है किन्तु प्रमाणिक उपनिषद् 12 हैं। इनमें से सभी में तो नहीं अपितु अधिकांश उपनिषदों में स्वल्प अथवा विस्तृत रूप में योगचर्चा उपलब्ध होती है। कुछ उपनिषदों में पंतजलि के समान योग के आठ अंग माने जाते हैं किन्तु कुछ में केवल छः अंग ही माने गए हैं। योग के आठ अंगों में एक अंग 'यम' है। उपनिषदों, पुराणों तथा स्मृति आदि ग्रंथों में भी 'यम' का उल्लेख प्राप्त होता है। यम से अभिप्राय है— सामाजिक व्यवहार की सार्वभौमिक मान्यता। यह योग का प्रथम आयाम है। ईशाोपनिषद् आदि प्रधान उपनिषदों में यद्यपि यम-नियमों का नाम लेकर अथवा योगांगों के रूप में उनका उल्लेख नहीं किया गया किन्तु इन उपनिषदों में सत्य, ब्रह्मचर्य, तपस्या पर बहुत बल दिया गया है। प्रारम्भिक समय में यम की कई संख्या थी। यद्यपि पंतजलि द्वारा योग दर्शन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह को यम कहा गया है। 'यम के अंगों में से 'अहिंसा' और 'सत्य' का वर्णन इस प्रकार है—

अहिंसा यम

व्यास जी के अनुसार सभी प्राणीयों से सर्वदा तथा सर्वथा द्रोह भावना न रखना ही अहिंसा है। अहिंसा का क्षेत्र अति विस्तृत है। व्यास जी कहते हैं कि अन्य सत्य आदि यमों के मूल में अहिंसा ही है। अहिंसा की सिद्धि के लिए दूसरे यम-नियम हैं। कायिक, वाचिक तथा मानसिक तीनों ही प्रकार की अहिंसा यहां पर अपेक्षित है अहिंसा तथा अन्य यमों का क्षेत्र अति विस्तृत करते हुए हिंसा आदि वितर्कों के तीन प्रकार हैं—(1) स्वयं किए गए (2) दूसरों से कराए गए तथा (3) अनुमोदित। इन सभी प्रकारों से हिंसा होती है। अंतः हिंसा का तीनों रूपों में त्याग करने का प्रयत्न करना चाहिए।

ईशादि उपनिषदों में अहिंसा का पृथक् रूप में अधिक उल्लेख नहीं किया गया तथापि उपनिषद् में एक कथा प्राप्त होती है कि प्रजापति ने 'द' अक्षर के द्वारा ही देवों-मनुष्यों तथा असुरों को क्रमशः इन्द्रियदमन, दान तथा दया का उपदेश दिया है। असुर हिंसा रत रहते थे। प्रजापति के उपदेश से

उन्होंने भी हिंसा को छोड़ दिया। देव तथा मनुष्य तो पहले से ही हिंसा से पृथक् थे। यह कथा उपनिषदों की अहिंसावृत्ति को ही घोषित करता है। योगदर्शन के समान ही ईशादि से भिन्न अन्य उपनिषदों में अहिंसा को शेष यमों की अपेक्षा महत्वपूर्ण बतलाया है। कहीं-कहीं पर अहिंसा योग दर्शन के प्रतिकूल वर्णित है।

जाबालदर्शोपनिषद् में कहा है—

वेदोक्तेन प्रकारेण विना सत्यं तपोधनः।
कायेन मनसा वाचा हिंसा—हिंसा च नान्यथा।।'

अर्थात् वेदोक्त हिंसा को छोड़ कर कायिक, वाचिक तथा मानसिक तीन प्रकार की हिंसा होती है। तब ही शायद उस समय 'वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति' उक्ति प्रकाश में आयी होगी।

सत्य यम

द्वितीय योगांग सत्य का अर्थ व्यास जी ने यथार्थ वाग्दमन से किया है। जैसा देखा है, जैसा अनुमान किया है तथा देखे हुए के अनुसार ही अपने मन तथा वाणी को रखना सत्य कहलाता है। व्यास जी के अनुसार वक्ता के द्वारा कही गयी वाणी यदि वचन छल, भ्रांति तथा प्रतिपत्तिबंधत्व से रहित होगी तभी सत्य कहलायेगी, अन्यथा नहीं। ऐसी वाणी ही सत्य कहलायेगी जो उक्त दोषों से रहित होने के साथ प्राणियों की उपकारक भी हो। उपनिषदों में सत्य पर बहुत बल दिया गया है। मुण्डकोपनिषद् में सत्य को ब्रह्म प्राप्ति के साधनों में प्रमुख माना गया है। इसी उपनिषद् में एक अन्य स्थान पर तो यह कहा गया है कि सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं। सत्य के द्वारा ही देवयान पथ विस्तृत है तथा ऋषियों की समस्त साधना का आधार सत्य ही है।

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।

येना क्रमन्तयृष्यो ब्रह्माप्तकामाः यत्र तत्सत्यस्य परमं विधानम्।

सत्यं वदम्।

सत्यान्न प्रमदितव्यम्।'

तैत्तिरीयोपनिषद् में समावर्तन संस्कार के समय स्नातक को आचार्य किसी भी अवस्था में सत्य की उपेक्षा न करके सर्वदा सत्य बोलने के उपदेश देता है। विद्याध्ययन काल में विद्यार्थी तथा अध्यापकों के लिए उपदेश दिया है—

ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि।

बृहदारण्यकोपनिषद् में सत्य को धर्म माना गया है।

यो वै स धर्मः सत्यं वै तत्।

तस्मात् सत्यं वदन्त माहु धर्मं वदतीति। (बृहदा....)

सत्य की साधना करने में पहले मौन या अल्प भाषिता का अभ्यास करना पड़ता है। अधिक बातें कहने से अनेक असत्य बातें प्रायः कही जाती हैं। मन को सत्य प्रवण में काव्य, कहानी, उपन्यास आदि काल्पनिक विषयों से विरत होना पड़ता है। बाद में अपारमार्थिक सत्य समूह को त्याग कर केवल

पारमार्थिक सत्य या तत्त्वसमूह का चिंतन करना पड़ता है। सत्य कहने से जहां पर दूसरों का अनिष्ट होता है वहां पर मौन विधेय है।

प्रासंगिकता

वर्तमान परिवेश में हिंसा का स्वरूप विकराल होता जा रहा है। आये दिन धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर हिंसक घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। जिसका बिल्कुल नया उदाहरण नए आतंकी संगठनों (आइ.एस.आइ.एस (ISIS), बोको हराम, अल सबाब) के द्वारा हिंसक घटनाओं को अंजाम देना है। व्यक्तिगत स्तर पर भी धन इकट्ठा करने की गलाकाट प्रतिस्पर्धा में किसी भी माध्यम से धन को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है, चाहे वह माध्यम कितना ही हिंसक क्यों न हो। जीव-जंतुओं के प्रति भी हिंसा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जैव विविधता के संरक्षण हेतु यह आवश्यक है की मानव जगत प्राणियों के प्रति भी अहिंसा का भाव रखे। अहिंसा रूपी यम का शायद तात्कालिक परिवेश में इतना महत्त्व न रहा हो परंतु वर्तमान भौतिकवादी विश्व में तो अहिंसा का महत्त्व और अधिक बढ़ता जा रहा है। महात्मा गाँधी ने अहिंसा का पालन करते हुए भारत को स्वतंत्र राष्ट्र बनाया तथा विश्व के समक्ष एक नया आयाम प्रस्तुत किया। विश्व के अन्य देशों ने भी अहिंसा का पालन करके अपने राष्ट्रों को गुलामी की जंजीरों से मुक्त किया। कुछ ही वर्ष पूर्व संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित करना इस बात की पुष्टि करता है कि अहिंसा की वर्तमान समय में अत्यधिक प्रासंगिकता है।

विश्व में भ्रातृत्व, सौहार्द, तथा सामंजस्य स्थापित करने हेतु अहिंसा के वैदिक सुत्रों का अध्ययन सहयोग कर सकता है। भविष्य को सुनहरा बनाने हेतु आवश्यक है कि हम अपने अतित से जुड़े रहें तथा निरंतर उसका अध्ययन करके अपनी गलतियों को सुधारें। भारतीय संविधान में कहा गया है कि राज्य पर्यावरण का संरक्षण तथा संवर्धन और वन, वन्यजीवों की रक्षा तथा अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि करे। इसके साथ ही भारत का संविधान भारत के नागरिकों को भी वन्यजीवों, नदी, झील आदि की रक्षा करने, उनके प्रति दयाभाव रखने तथा हिंसा से दूर रहने को कहता है। संविधान के मूल्यों का पालन करने हेतु यह आवश्यक है कि हम अहिंसा को अपने जीवन में धारण करें तथा समाज में सामंजस्य व शांतिपूर्ण वातावरण को निर्मित करें। हजारों वर्षों से अहिंसा विश्वभर के लोगों की जीवन अभिवृत्तियों और उनकी आन्तरिक अच्छाइयों में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रही है। अहिंसा की असीम शक्ति को हमारे पूर्वजों, दार्शनिक धर्माचार्यों ने बड़ी गम्भीरता से पहचाना। अहिंसा जीवन के प्रति सम्मान और जीवन मूल्यों का सार तत्व है। ये मूल्य दैनिक जीवन के हर पक्ष में प्रयुक्त होते हैं तथा जीवन और उसकी चुनौतियों में सहभागिता को दर्शाते हैं। अहिंसा केवल युद्ध और शांति के प्रति हमारे दृष्टिकोण को ही स्पष्ट नहीं करती वरन् पड़ोसियों के साथ हमारी दैनन्दिन अन्तः क्रियाओं, जीविकोपार्जन के तरीके, हमारा भोजन, पर्यावरण के साथ हमारे सम्बन्ध, पशुओं के साथ हमारा व्यवहार, शिक्षा, व्यवसाय और राजनीति के बारे में हमारे विचार आदि को परिलक्षित करती है। अहिंसा केवल वैयक्तिक पर्यावरणीय नैतिकता के विकास का सिद्धान्त ही नहीं है वरन् एक वैश्विक ढाँचे के विकास का दार्शनिक आधार भी प्रस्तुत करती है, जिसमें प्राणी मात्र के प्रति सम्मान हो तथा परस्पर सामंजस्य और सन्तुलन हो। पलायनवादी जीवन शैली से दूर अहिंसा हमें प्राणी मात्र के प्रति वैयक्तिक दायित्व के आनन्दपूर्वक निर्वहन के लिए प्रोत्साहित करती है। अहिंसा हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रही है।¹

सत्य भारतीय दर्शन का अभिन्न अंग है। भारत के सभी धर्मों में भी सत्य को बराबर महत्त्व दिया है। आधुनिक युग में मनुष्य छल कपट का सहारा लेकर अपने हित साधने पर केन्द्रित होता जा रहा है। असत्य को आधार बनाकर एक मजबूत भवन का निर्माण नहीं किया जा सकता। आज वर्तमान विश्व में संत्रास, कोलाहल व बेवैनी का माहोल है। सत्य से मानव का जितना विचलन हुआ है उसी अनुपात में मानव परम आनन्द से विमुख होता चला गया। गहन चिंतन से सत्य के विभिन्न पक्षों और प्रयोगों को समझकर जीवन को समायोजित करके इस शाश्वत मूल्य को शिव के रूप में मन-मंदिर में प्रतिस्थापित करना होगा।

प्रत्येक राष्ट्र आज आयुध निर्माण में लगा है क्योंकि एक दूसरे से उत्पन्न खतरों व समस्याओं का विश्लेषण व समाधान केवल बल, साम्राज्यवादी मानसिकता व कुटनीतिक प्रयासों से होता है अगर हम सत्य रूपी वास्तविकता को समझेंगे तो हमें समस्याओं को समझने में सहायता मिलेगी जो शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व का रास्ता दिखायेगा। सत्य निर्विवाद रूप से

वैश्विक स्तर पर मानवता व मानव मूल्यों की स्थापना का साधन हो सकता है बशर्ते सत्य का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करें। यदि सत्य को साक्षी मान लिया जाये तो न हमें किसी ईश्वर की आवश्यकता पड़ेगी और न ही किसी वाद को सुलझाने के लिए किसी न्यायालय की। सत्य मनुष्य के चरित्र निर्माण में अहम् भूमिका निभाता है। सत्य वाचन करने वाले मनुष्य से सभी मनुष्य प्रेम करते हैं। मानव जाति के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम सत्य का पालन करें। एक असत्य के कारण हमें हजारों असत्य का सहारा लेना पड़ता है जिससे बेवजह तनाव उत्पन्न होता है। सत्य का पालन करने से मनुष्य कभी भी भय ग्रस्त नहीं होता जिससे स्वतः ही उसका तनाव दूर हो जाता। सत्य न केवल वाणी से अपितु हमें मानसिक रूप से भी स्वस्थ बनाता है।

वर्तमान में असत्य का जाल इतना अधिक फैला हुआ है कि हमें अपने रक्त सम्बन्धों पर भी पूर्णतः विश्वास नहीं करते जिससे एक-दूसरे के प्रति अविश्वास बढ़ता जाता है। यह परिणाम केवल व्यक्तिगत व पारिवारिक या किसी देश की सीमा तक ही सीमित नहीं है अपितु राष्ट्र भी दोहरे चरित्र को दर्शाते हैं। इसलिए इस भौतिकवादी युग में सत्य की प्रासंगिकता और भी अधिक हो जाती है। मनुष्य को भय, तनाव, चिंता व आक्रोश जैसी समस्याओं से उबारने में सत्य महत्त्वपूर्ण साबित हो सकता है। मनुष्य-मनुष्य, समाज से समाज व एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र के मध्य परस्पर सहयोग व विश्वास की भावना सत्य के आधार पर मजबूत की जा सकती है। आज एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को सदैव शक की निगाहों से देखता है इसका मुख्य कारण राष्ट्रों का दोगला व्यवहार। ऐसे राष्ट्र प्रत्यक्ष रूप से सहयोग व सौहार्द प्रकट करते हैं जबकि पीछे से विरोधियों का काम करते हैं। इस तरह के राष्ट्र मुँह में राम बगल में छुरी की उक्ति को चरितार्थ करते हैं। अतः वैश्विक शांति, सहयोग व सौहार्द के लिए सत्य रूपी नैतिक मूल्य का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में वैमनस्यता की भावना में जलते विश्व को बंधुत्व व मित्रता की भावना से ठंडा किया जा सकता है। बंधुत्व व मित्रता की भावना का विकास अहिंसा के मार्ग को अपना कर किया जा सकता है क्योंकि अहिंसा व सत्य से दूसरों के प्रति दयाभाव व विश्वास उत्पन्न होता है। अहिंसा व सत्य के द्वारा समाज में व्याप्त अविश्वास तथा अशांति के वातावरण को दूर किया जा सकता है। मानव कल्याण हेतु यह आवश्यक है कि अहिंसा व सत्य का मार्ग अपनाए। आधुनिक समाज में व्याप्त धार्मिक कट्टरता, हिंसा, महिलाओं का अपमान व शोषण झुट, तनाव व अवसाद जैसी समस्याओं को दूर करने में अहिंसा व सत्य का सिद्धांत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में भी अहिंसा व सत्य की प्रासंगिकता उतनी है जितनी की तत्कालिक समय में थी।

संदर्भ सूची

1. रघुवीर वेदालंकार, वेदाचार्य, *उपनिषदों में योग-विद्या*, के.सी. पब्लिशर्स, दिल्ली, 1999 पृ. 27
2. वही, पृ. 35-36
3. वही, पृ. 37
4. जाबालदर्शनोपनिषद्, 1.7
5. तैत्तिरीयोपनिषद्, 2.20.2
6. जिनेन्द्र जैन, *जैन विद्या एवं बौद्ध अध्ययन के आयाम*, राधा पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ली, 2004 पृ. 200-201